Vol 6 Issue 6 Dec 2016

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

GRT Golden Research Thoughts
ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 6 | December - 2016

''डाकू समस्या एक अनुशीलन''
(जंगल जहाँ शुरु होता है के विशेष संदर्भ में)

प्रा.डॉ.अशोक एम. पवार
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, ग.तु.पाटील महाविद्यालय,
नंदुरबार.

प्रस्तावना :
संजीव का प्रसिध्द उपन्यास 'जंगल जहाँ शुरु होता है' में मुख्यतः डाकू समस्या को आधार बनाया है। डाकू समस्या किसी भी देष के लिए घातक सिध्द होती है। अतः यह अजनतांत्रिक ताकतों की शक्ति बढाने वाली प्रवृत्ति है। कुछ लोग अपने निजी स्वार्थ के लिए समाज को लूटते हैं। उन अनैतिक ताकतों को डाकू कहा जा सकता है। भारत के अनेकानेक प्रांतो में डाकू समस्या बडे पैमाने पर कार्यरत है परंतु उत्तर भारत का चंबल नामक क्षेत्र बहुत ही चर्चित है। इसी के समानांतर बिहार राज्य का मिनी चंबल कहा जानेवाला बेतवा अंचल भी डाकुओं का केंद्र बना हुआ है। यहाँ के डाकुओं ने लोगों का जीना हाराम कर रखा है। इस भयावह समस्या पर संजीव ने अपनी पैनी दृष्टि डाली है।

संजीव ने इस उपन्यास के माध्यम से बेतीया की डाकू समस्या का सर्वांगीण अध्ययन करने के उपरांत इस उपन्यास का लेखन किया है। यह समस्या स्वतंत्रता पूर्व काल से लेकर आज तक बनी हुई है। महात्मा गांधी, आजाद भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु के साथ–साथ अन्य प्रधानमंत्रीयों ने भी डाकू उन्मुलन की घोषना की थी। इस संदर्भ में प्रयास भी हुए लेकिन यह समस्या आज भी बनी हुई है। इतना ही नहीं, आये दिन नये डाकू पैदा होते हैं। कुमार साहब के व्दारा यह बात हमारे सामने आती है। कुमार कहते हैं – ''फिर एक नए आपराधिक गिरोह का जन्म। काली, एक को पकडकर बंद करो तो चार और तयार हो जाते हैं।''1 ऐसे में प्रषासन के

सामने डाकू उन्मुलन की समस्या चुनौती बनकर आती है।

उपन्यास के आरंभ में ऑपरेषन ब्लॅक पाइथॉन के अंतर्गत डाकू उन्मुलन हेतु एक होनहार और अक्लमंद जॉबाज अधिकारी के रुप में कुमार (डी.एस.पी.) की नियुक्ती होती है। कुमार के व्दारा रानी महल कॅंप का चार्ज लेने से डाकू समस्या को जानने की प्रक्रिया शुरु होती है। जैसे–जैसे कुमार साहब अपना कार्य करते है, नयी–नयी बातें और कारण डाकू समस्या को सहायक है, ऐसी घटनाएँ सामने आती हैं।

उपन्यासकार संजीव ने विवेच्य उपन्यास में डाकू समस्या का चित्रण करते हुए इस बात पर भी दृष्टि डाली है कि डाकू पैदा कैसे होते हैं। अर्थात् उस क्षेत्र में जो नामी डाकू हैं उनकी डाकू बनने की प्रक्रिया पर नजर डाली है। परषुराम, गोकुल और बिंदा ये थरुहट के नामी डाकू हैं, पहले वे डाकू नहीं थे। वैसे कोई भी व्यक्ति पहले से डाकू नहीं होता। इन तीनों युवकों की बात करें तो इन्होनें भूमि आंदोलन चलाया था। जमींदारों की अतिरिक्त जमीन गरिबों या भूमिहिनों को दी जाए इस संदर्भ में इन्होंने किसानों आदिवासियों का आंदोलन चलाया था जो बाद में कुचल दिया गया इनकी ताकत और प्रसिध्दी का फायदा नेताओं ने लेना शुरु किया। मंत्री के लिए इनकी हैसियत देखिए– ''अरे हम का कहें, सब समझते हैं, सब! डाकू है तो का हुआ, हीरा हैं हीरा सब लेकिन ..... हैं तो डाकू ही नं! . ... परधान मंत्री एलान कर गए हैं बेतिया में, डाकू उन्मुलन। अ हियाँ उन ही के मिनिस्टर हम, हमरे ही घर में डाकू!''2 इस बात से स्पष्ट होता है कि परषुराम, बिंदा और गोकुल को राजकीय संरक्षण मिला। नेताजी की एक और बात देखिए वे कहते हैं, ''वफादार निकले गोकुल और बिंदा और विभीषण वन के मिला परषुराम.... ।''3 इस तरह की बातों के आधार पर कहा जा सकता है कि डाकुओं को नेताओं का संरक्षण मिलने के कारण डाकू उन्मूलन में बाधा उत्पन्न होती है।

बेतिया और रेता के होनहार युवा डाकू बन जाते हैं इसका और एक कारण बताया गया है वह है प्रकृति। नित्य की प्राकृतिक विपदाओं के कारण यहाँ के थारुओं को भूख का सामना करना पडता है। इनकी जमीने गिरवी रखी जाती है। कभी यहाँ के जमींदार इन जनजातियों के जानवर पकड कर ले जाते हैं। मीलें बंद हो गई हैं। मजदूरी नहीं दी जाती। इन्हें डाकू भी परेषान करते हैं, पुलिस भी और सेठ–साहूकार भी। इनकी बहू–बेटियों का शोषण किया जाता है परिणामतः काली जैसे लोग भी डाकू बन जाते हैं। काली जो कभी बहुत होनहार लडका था। वह इमानदार, मेहनती और शर्मिला लडका था पर शोषण और अन्याय–अत्याचार ने उसे डाकू बनने के लिए तैयार किया। इसकी लडाई न्यायिक और जातीय है इसलिए उसे सबसे खतरनाक डाकू घोषित किया जाता है।

बेतिया की डाकू समस्या बडी भयंकर है। इन डाकुओं की भयंकरता और क्रूरता तब सामने आती है जब बंषी शोले फिल्म के गब्बर की तरह गांववालों पर हमला करता है। उनकी पषुता तभी सामने आती है जब पषुओं की नांद में डाला हुआ खाना उन लोगों को जबरन खिलाया गया। इससे बीमार होकर पाँच लोग मरें दस लोगों की हालत खराब हो गई थी। बेतिया के डाकुओं व्दारा लोगों को अगवाह किया जाना, बदले में पैसे मांगना। वे डाकू अगवा किये गये व्यक्ति के बदले रुपये मांगते हैं, नहीं मिले तो उस व्यक्ति की हत्या कर डालते हैं। परषुराम, परेमा, बिंदा के गिरोह थारुओं की औरतों का शोषण करते हैं। काली की फूफेरी बहन मलारी और भौजी इस बात के उदाहरण हैं।

एक बार यादव नामक डी.एसी.पी. की नियुक्ति बेतिया में हुई थी। यादव के सामने समस्या निर्माण हुई कि इन डाकुओं को कैसे समझाए । उन्होंने डाकुओं को

सुझाव दिया कि तुम हत्या और डकैती छोडकर किडनॅपिंग करना शुरु कर दो। यह भी बताया था कि चंबल के डाकू ऐसा ही करते हैं। इस घटना के आधार पर कहा जा सकता है कि पुलिस डाकुओं का खातमा करने की बजाए उन्हें नये मार्ग बता रही है। जाति यहाँ की डाकू समस्या का एक कारण है। कुमार साहब एक बार कहते हैं, ''मैं दरअसल उस बिंदु को पकडना चाहता हूँ, जहाँ से एक डाकू जन्म लेता है?''4 मुरली पांडे ने उन्हें बताया था– ''तब तो सर आपको अफसरषाही को भी सर्च करना पडेगा।''5 यहाँ डाकू समस्या जातीय स्वार्थ में उलझी हुई है। डाकू और पुलिस एक ही जाति के हो तो पुलिस अपना कर्तव्य करने के बजाय जाति से कट जाने के डर से उन्हें छुट देता है। परिणामतः यह समस्या कम होने के बजाय नये रुप में पनपती दिखाई देती है।

कुमार साहब एक सच्चे पुलिस अधिकारी हैं। वे ऑपरेषन ब्लॅक पाइथॉन के आधार पर संपूर्ण डाकू उन्मूलन करना चाहते हैं। वे निःपक्ष भाव से अपना कार्य करना चाहते हैं। उन्होंने मास्टर मुरली पांडे से मिलकर डाकुओं के बारे में जानना चाहा था कि वे कौन हैं जो डाकू बने घुमते हैं; वे डाकू क्यों बने? या इन्हें किन लोगों का संरक्षण प्राप्त है। इनमें काली भी शामिल है। डाकू उन्मुलन के प्रयास में कुमार साहब अपनी जान जोखिम में डालकर डाकुओं से मिलकर उनसे बात करना चाहते हैं। ऐसा करके वे उन्हे समझाना चाहते हैं और उन्हें आत्मसमर्पण का मौका देना चाहते हैं।

कुमार साहब को काली का पत्र प्राप्त होने पर वे काली को मिलने पहुंचते हैं। कुमार साहब बडी सावधानी और होषियारी से काली को पुलिस की चंगुल से छुटने के लिए और आराम की जिंदगी गुजारने के लिए आत्मसमर्पण का मार्ग बताते हैं। वे काली के सामने अपनी भूल भी स्वीकार करते हैं, फरीयाद के समय मिल न सकने के कारण। कुमार साहब काली को कहानियाँ सुनाता है, राजपूत होने की, ठाकुर होने की मगर सारी बाते बेकार होती है। कुमार की बात देखिए – ''गलत मत समझो काली। तुमसे बात करके मैंने तुम्हारे अंदर के इनसान का लहुलुहान चेहरा देख लिया है। मैं इस नेक इनसान को बचाना चाहता हूँ । तुम अपने साथियों के साथ आत्मसमर्पण कर दो....।''6 काली के व्दारा न मानने पर कुमार साहब काली को दो किताबे (दिमाग को कैसे नियंत्रित करें और भागो नहीं, दुनिया को बदलो) भेंट करते हैं।

कुमार साहब बेतिया के डाकुओं का अध्ययन करने के पष्चात जब एक दिन अधिकारियों की सभा बुलाई जाती है तब डाकू उन्मुलन के लिए उपाय बताते हैं–''मैंने बार–बार कहा है सर कि डाकू समस्या कोई ऊपर का आवरण नहीं है कि आप उसे खरोंचकर फेंक दें। इनकी जडों में भूमि सुधार का न होना, ढिला प्रषासन, पॉलिटिकल सेल्टर, रोजगार की समस्या, धर्म टिपीकल भौगोलिक स्थिति आदि हैं। सारा कुछ दुरुस्त कर दीजिए, रोग खुद–ब–खुद खत्म हो जाएगा।''7 डाकू समस्या के जो फीड बॅक्स हैं उनमें एक 'धर्म' भी है। लखरॉंव में विष्वास रखनेवाले लखरॉंव में पापमुक्ति के लिए आते हैं। धर्म इन डाकुओं में क्या आत्मविष्वास भरता है। ये शुध्द होकर सोसायटी में पापमुक्त माने जाएँगे। फिर से चोरी, डकैती, यौन उत्पीडन और अपहरण करने लगेंगे।

लखरॉंव के बाद पुलिस कारवाई तेज होती है। इसमें कई डाकू मारे जाते हैं। परषुराम चुनाव लढता है। जीत भी जाता है। इस बीच डाकू गिरोह टूट जाते हैं। काली के साथी भी छूटते हैं और अंत में काली अकेला रह जाता है। इस तरह डाकू उन्मुलन होता है।

'जंगल जहाँ शुरु होता है' उपन्यास आदिवासी विमर्ष के संदर्भ में मील का पत्थर बन गया है। उपन्यास के रचनाकार संजीव आदिवासी जनजीवन की खोज करने वाले खोजी बनकर हमारे सन्मुख आते हैं। उन्होंने उपन्यास के चरित्र कुमार साहब के माध्यम से रेता क्षेत्र के आदिवासियों के जीवन की खोज एवं जाँच–पडताल की है। रेता क्षेत्र की डाकू समस्या एक तिलस्मी अंदाज में बरकरार है, खतम होने का नाम ही नहीं ले रही है। यहाँ की डाकू समस्या को नष्ट करने के प्रयास बहुत पहले से हो रहे हैं। महात्मा गांधी, पं.जवाहरलाल नेहरु, श्रीमती इंदिरा गांधी से लेकर राजीव गांधी ने भी यह घोषणा की थी कि रेता को डाकू मुक्त किया जाएगा। लेकिन यह समस्या अभी भी बरकरार है। इससे कई लोगों का जीवन प्रभावित हुआ है।

उपन्यासकार ने डाकू समस्या के कारणों को कुमार साहब के माध्यम से प्रस्तुत किया हैं। प्राकृतिक कारणों में एक है नारायणी नही। यहाँ ज्यादा बारीष होती है जिस कारण नारायणी नदी में बाढ आती है। बाद के कारण किसानों की फसलें नष्ट होती हैं, घर ढह जाते हैं। भूख से बेहाल लोग यहाँ के जमीदारों के पास जाते हैं। वहाँ जबरन वसुली, बेगारी, बलात्कार, दमन इसकी ट्रेनिंग मिलती है। वे ही लोग यह काम खुद के लिए करने लगते हैं। यही लोग राजनेताओं के लिए बुथ कॅप्चरींग करना, चंदा वसुलना, पार्टी फंड, इकट्ठा करना जैसे काम करते हैं। बदले में इन्हें संरक्षण मिलता है। दूसरा कारण है, यहाँ के ठेकेदारों, जमीदारों, डाकुओं तथा पुलिस के व्दारा किया जानेवाला शोषण। ठेकेदार मजदूरी नहीं देते, जमींदार जमीने छीन लेते हैं, गाय–भैंस छुडा ले जाते हैं, डाकू लोग आदिवासी स्त्रियों का शोषण करते है, कुछ पुलिस भी तो ऐसा काम करते हैं जिससे उनके परिवार नष्ट हो जाते हैं। ऐसे लोग डाकू बनना पसंद करते हैं ताकि बदला ले सके। कुमार साहब तो डाकू समस्या के सहायक कारणों में धर्म को भी जोडते हैं क्योंकि लखरॉंव में षिवपूजा होती है। डाकुओं की धारणा है कि लखरॉंव करने से सारे पाप धुल जाते हैं। इन्हें शुध्द समझा जाता है, लोगों की घृणा दूर होती है। इनमें नया आत्मविष्वास पैदा होता है और फिर चोरी, डकैती, यौन उत्पीडन, अपहरण शुरु होता है।

संजीव ने इस उपन्यास में डाकू समस्या उन्मुलन के कुछ उपाय भी बताये हैं। वे लिखते हैं डाकू उन्मुलन के लिए सबसे पहले भूमि सुधार कानून को गंभीरता से लागु किया जाए । प्रषासनिक व्यवस्था में सुधार किया जाया जाना चाहिए । समानता को महत्व दिया जाए, रोजगार उपलब्ध कराए जाएँ तथा राजनीति में भी सुधार हो तो यह समस्या दूर हो जाएगी। संक्षेप में कह सकते हैं कि यह उपन्यास महज डाकू समस्या को प्रस्तुत करनेवाला न होकर समस्या के कारणों को ढूँढकर इस समस्या को सुलझााने के लिए कुछ सुझाव देकर समाज में सुधार लाने हेतु इमानदार प्रयत्न करता है। अतः यह उपन्यास सषक्त और कालजयी उपन्यास है।

संदर्भ सूचीः

1. जंगल जहाँ शुरु होता है – संजीव, पृ.99, राधाकृष्ण प्रकाषन प्रा.लि. नई दिल्ली प्रे.स.2000
2. वही, पृ.35
3. वही, पृ.38
4. वही, पृ.104
5. वही, पृ.104
6. वही, पृ.139
7. वही, पृ.146

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org